S. NO. 3082

Roll no.

Name of Course : B A Programme Hindi- CBCS
Semester : II
Name of the Paper : Hindi A
Unique Paper Code : 62051202

Duration : 3 Hours **Maximum marks : 75**

आवश्यक निर्देश -

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

---

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 x 3 = 30)

(क)

कबीर इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूँछ जु पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार॥
करता था तो क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोवै पेड़ बबूल का,अम्ब कहाँ तैं खाइ॥

अथवा

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के
नदीनद मद गैबरन के रलत है-
ऐलभैल खलक में गैल गैल-फैल खैल-
गजन की ठैल पैल-सैल उसलत है
तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि-
थारा पर पारा पारावार यों हलत है

(ख)

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ |
जा तन की झाइं परे, स्यामु हरित-दुति होई ||
फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टूटी लाज की लाव।
अंग-अंग छबि झौंर में, भयौ भौंर की नाव॥

अथवा

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती

'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।'

(ग)

कहाँ गया धनपति कुबेर वह? कहाँ गयी उसकी वह अलका?
नहीं ठिकाना कालिदास के, व्योमप्रवाही गंगाजल का-,
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय, बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कविकल्पित था-।

अथवा

अद्वितीय हर एक है मनुष्य
औउसका अधिकार अद्वितीय होने का '
छीनकर जो खुद को अद्वितीय कहते हैं
उनकी रचनाएँ हों या उनके हों विचार
पीड़ा के एक रसभीने अवलेह में लपेटकर
परसे जाते हैं तो उसे कला कहते हैं !

2. राजभाषा से आप क्या समझते हैं? राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति पर विचार कीजिए। (10)

अथवा

आदिकाल की प्रवृतियों का सामान्य परिचय दीजिए।

3. कबीर जितने बड़े कवि हैं उतने ही बड़े समाज सुधारक भी। इस कथन की परीक्षा कीजिए। (10)

अथवा

भूषण की कविता में राष्ट्रीय चेतना बताइए।

4. नागार्जुन की कविता में प्रकृति सौंदर्य का चित्रण कीजिए। (10)

अथवा

रघुवीर सहाय की कविता 'कला क्या है' का भाव सौन्दर्य बताइए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (5x3 = 15)

(क) संपर्क भाषा
(ख) भक्तिकाल के प्रमुख कवि
(ख) रीतिमुक्त कवि
(ग) आधुनिक काल का नामकरण
(घ) जयशंकर प्रसाद का महत्त्व
(ङ) छायावाद
(च) हिन्दी कहानी